

अभियोक्तव्य (wie eben) adj. *ansuklagen*: न स राजाभियोक्तव्यः स्वकं
संसाधयन्धनम् M. 8, 50.

अभियोग (wie eben) m. 1) *Richtung seiner Thätigkeit auf Etwas, Beobachtung, Ausübung* H. 300. Das obj. im loc.: सत्तः स्वयं परकृतेषु कृताभियोगाः BHART. 2, 65. यौने ऽभियोगः कृतः AMAR. 92. geht im comp. voran: नयाभियोगे मनसः प्रसादं समापयत्वात्मगुणेन कामम् R. 4, 29, 25. कार्याभियोगे ऽभिविष्टबुद्धिः 5, 51, 26. तपोऽभियोगादपिरूपसंयमो विहाय देहम् 42, 17. विपरीतसुरताभियोगे KĀURAP. 12. — 2) *Angriff* AK. 3, 3, 13. 4, 170. MED. r. 248. Mit dem subj. componirt: अघ्रातपरभियोग KUMĀRAS. 7, 50. — 3) *Anklage*: अभियोगमनिस्तीर्य JĀG. 2, 9. महभियोगेषु 95. Vgl. मिथ्याभियोग.

अभियोगिन् (wie eben) adj. *anklagend*: मिथ्याभि° JĀG. 2, 11.

अभियोजन (wie eben) n. *ein wiederholtes Anschirren*: अभियोजनं नाम पुनर्नयोजनम् SĪ. zu CAT. Br. 9, 4, 2, 11.

अभिरक्षितर (von रक्ष् mit अभि) m. *Beschützer*, mit dem gen. des obj. M. 7, 35.

अभिरति (von रत् with अभि) f. 1) *das Vergnügen-Finden an Etwas*: पिशुनवादिषु HIT. I, 129. न मृगाभिरतिः RAGH. 9, 7. — 2) N. einer Welt bei den Buddhisten BURN. Lot. de la b. I. 113. 391.

अभिराज् (अभि + राज्) adj. *ringsum herrschend* KAUÇ. 77.

1. अभिराम (von रम् mit अभि) adj. f. *आ* *woran man seine Freude hat, erfreulich, angenehm, lieblich, hübsch* H. 1444. R. 1, 15, 19. 2, 24, 5. 59, 12. 3, 49, 23. 4, 27, 21. 5, 11, 20. ÇĀK. 73. MEGH. 52. सर्वप्रताभि° R. 2, 58, 29. मनोऽभि° 5, 11, 20. RAGH. 1, 39. ओत्राभि° 2, 72. नयनाभि° 6, 47. PRAB. 6, 5. गुणाभिरामं रामम् R. 5, 19, 1. श्रीवभङ्गाभिरामम् adv. ÇĀK. 7. रामाभिरामेरितचित्तदोष R. 5, 11, 8.

2. अभिराम (अभि + राम) *auf Rāma bezüglich*, Titel eines Gedichts Verz. d. B. H. No. 536.

अभिराष्ट्र (अभि + राष्ट्र) adj. *ringsum herrschend*: अभिराष्ट्रो विषासु-
क्तिः । यथाक्रमेण भूतानां विराजानि जनस्य च ॥ RV. 10, 174, 5.

अभिरुचि (von रुच् mit अभि) f. *Zufriedenheit, Genügsamkeit*: यशसि BHART. 2, 53. = HIT. I, 28. भैते ÇĀNTIC. 3, 12.

अभिरुचिर (अभि + रुचिर) adj. *durchgängig glänzend, schön*: रथम् R. 3, 39, 5.

अभिरूप (अभि + रूप) 1) adj. f. *आ* a) *entsprechend, angemessen*: आ-
मुः शिशानो वृषभो न भीम इति । ऐन्द्यो ऽभिरूपा द्वादश भवति CAT. Br. 9, 2, 6. जाताय जातवतीम् (रुचम्) अभिरूपामनुब्रूयात् AIR. Br. 1, 16, 21. काममनभिरूपमस्या वयसो वत्कलम् ÇĀK. 10, 6, v. l. — b) *schön* AK. 3, 4, 134. MED. p. 23. विषं मृशतीम्भिरूपा विराजं पश्यन्ति त्वेन त्वे पश्यन्त्ये-
नाम् AV. 8, 9, 9. उत्कृष्टायाभिरूपाय वराय सदशाय च । — कन्या दद्यात् M. 9, 88. अभिरूपगुणभूषिष्ठा परिषत् ÇĀK. Ch. 2, 1. N. (BOPP) 12, 30. — c) *unterrichtet, gelehrt* AK. 3, 4, 134. H. 341. MED. p. 23. कामं श्रोद्धे ऽर्चयेन्मित्रं नाभिरूपमपि वरिम् M. 3, 144. अभिरूपभूषिष्ठा परिषदियम् ÇĀK. 3, 11. — 2) m. a) *Mond*. — b) *Çiva*. — c) *Vishṇu*. — d) *Kāmadeva* ÇABDAK. im ÇKDr.

अभिरूपक von und = अभिरूप P. 8, 1, 8, Sch. am Anf. eines comp. vor कृत u. s. w. gaṇa अणयादिः कुमारभिरूप gaṇa अमणादि.

अभिरारुर्द (von रुद् mit अभि) adj. *Thränen (der Sehnsucht) erregend*: इदं खनामि भेषजं सौपश्यमभिरारुर्दम् AV. 7, 38, 1.

अभिलक्ष्यम् (von अभि + लक्ष्य) adv. *nach dem Ziele hin*: शरम् — शब्दं प्रति गजप्रेप्सुरभिलक्ष्यमपातयम् DAÇ. 1, 22.

अभिलङ्घन (von लङ् mit अभि) n. *das Hinüberspringen*, mit dem gen. des subj. und obj.: त्रयोणामेव भूतानां सागरस्याभिलङ्घने ॥ शक्तिः स्यात् R. 5, 53, 9. 10. Aller Wahrscheinlichkeit nach verlesen für अतिलङ्घन.

अभिलाप (von लप् mit अभि) m. 1) *Ausdruck, Wort* TRK. 1, 1, 119. KATHĪS. 23, 94. SĪH. D. 30, 2. — 2) *संकल्पाङ्गवाक्यम्* । यथा । काम्यभिला-
परहितः कुशतिलजलत्यागद्वयः संकल्पः शास्त्रार्थः । इति प्रक्रमाधिकरणम् । ÇKDr. — Vgl. अभीलापलप्.

अभिलाव (von लू mit अभि) m. P. 3, 3, 28. *das Kornschneiden* AK. 3, 3, 24. H. 1821.

अभिलाष (von लष् mit अभि) m. *das Verlangen, Lust, Hinneigung* AK. 1, 1, 2, 28. 3, 4, 20, 234. H. 431. P. 1, 4, 33, Sch. RAGH. 3, 4. आत्माभि-
लासः MEGH. 109. भव हृदय साभिलाषम् ÇĀK. 27. साभिलाषा (दृष्टिः) Citat
beim Sch. zu 33. साभिलाषं (adv.) निर्वाण्य 33, 12. Das obj. im loc.: यदैव
राशे क्रियते ऽभिलाषः PAÑĀT. V, 56. न खलु सत्यमेव शकुन्तलायां ममा-
भिलाषः ÇĀK. 30, 15. तस्यां साभिलाषो ऽभवद्युवा KATHĪS. 10, 50. mit प्रति
im acc.: मनुषाः — साभिलाषाः सुतान्प्रति DEV. 1, 39. geht im comp. vor-
an: आहाराभि° PAÑĀT. 197, 23. इव्याभि° HIT. I, 204. Am Ende eines
adj. comp. f. आ KATHĪS. 7, 16. Nach BHARATA *die erste Regung der Liebe*,
s. ÇĀK. zu ÇĀK. 22. = संगमेच्छा RASAM. im ÇKDr.

अभिलाषक (wie eben) adj. *verlangend nach*, mit dem acc.: संप्रामम-
भिलाषकः R. 6, 2, 31.

अभिलाषिन् (wie eben) adj. dass. Das obj. im loc.: अस्यामभिलाषि मे
मनः ÇĀK. 21. am Ende eines comp. VIKR. 13, 20, v. l. MEGH. 76 (°लासिन्).
RAGH. 2, 6. 3, 36. बलात्काराभि° *mit Gewalt* (nach einem Frauenzimmer)
verlangend KATHĪS. 20, 123.

अभिलाषुक (wie eben) adj. f. *आ* dass. AK. 3, 1, 22. H. 429. Das obj.
im acc.: जयमन्त्रभवान्नमरातिष्ठभिलाषुकः KIR. 11, 18. geht im comp.
voran: कन्याभि° KATHĪS. 13, 49. पुरुषात्तराभिलासुका ÇUK. in LA. 42, 14.

अभिलास (SĀRAS. zu AK. im ÇKDr.) u. s. w. s. u. अभिलाष u. s. w.

अभिलूता (अभि + लूता) f. *ein spinnenartiges Insect*: साध्याभिरभिलू-
ताभिर्दृष्टमात्रस्य देकिनः SUÇ. 2, 299, 16.

अभिवदन INDR. 3, 19. = अभिवादन MBH. 3, 1835. *Anrede* (von वद् mit
अभि) MALLIN. zu KUMĀRAS. 6, 2.

अभिवैत् (von अभि) adj. *das Wort अभि enthaltend* CAT. Br. 13, 5, 2, 11.

अभिवन्दन (von वन्द् mit अभि) n. *Begrüßung*: आरोपयं ब्रूहि कौश-
ल्यामथ पदाभिवन्दनम् (das Metrum erfordert पादाभि°) । सीतायाः सूत
मम च वचनात् R. 2, 52, 30. उभयोरेव शिरसा चक्रे पादाभिवन्दनम् SĪV. 2,
3. वैदेह्या कनूमान् — पादाभिवन्दनं चक्रे R. 5, 37, 26. MBH. 1, 7565. अथ मातु-
गुह्याणां च कृतपादाभिवन्दनः KATHĪS. 4, 90. तां च कृतपादाभिवन्दनाम् 22,
131. — Vgl. अभिवादन.

अभिवयस् (अभि + वयस्) adj. *jung, frisch*; übertr. auf den Soma:
तीत्रस्याभिवयसो अस्य पाहि RV. 10, 160, 1.

अभिवर्ग und अभिवर्त s. u. अभी°.

अभिवर्तिन् (von वर्त् mit अभि) adj. *hingehend zu, entgegengehend*: लि-
प्ता रूपि शरास्तेन शस्त्राणि विविधानि च । नाकल्पत रणार्थाय मृत्युका-
लाभिवर्तिनः ॥ R. 6, 88, 35.